

# Regional Media Coverage

## 1) Abhyan

### स्वच्छ हवा नागरिकों का मौलिक अधिकार, हर हाल में कम करना होगा प्रदूषण: सुरेश प्रभू

लक्ष्मण : भारत एक और चुनौती एक आर्थिक बल अर्थिक है। लेकिन किसी बल से बढ़ावा होती जा रही है। हमें वायु की साफ़ता मुहैया कराने के लिए कदम उठाने हैं। यह संदेश और संवाद सुरेश प्रभू का। यह संदेश और संवाद सुरेश प्रभू का। यह संदेश और संवाद सुरेश प्रभू का।

उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा। उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा। उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा।

परिचय और जानकारी के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा। उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा। उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा।

## 2) Dainik Akshya Mail

### स्वच्छ हवा नागरिकों का मौलिक अधिकार, हर हाल में कम करना होगा प्रदूषण : सुरेश प्रभू

हरि प्रसाद शर्मा राजा मुंबई : भारत एक और चुनौती एक आर्थिक बल अर्थिक है। लेकिन किसी बल से बढ़ावा होती जा रही है। हमें वायु की साफ़ता मुहैया कराने के लिए कदम उठाने हैं। यह संदेश और संवाद सुरेश प्रभू का। यह संदेश और संवाद सुरेश प्रभू का। यह संदेश और संवाद सुरेश प्रभू का।

उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा। उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा। उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा।

परिचय और जानकारी के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा। उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा। उन्होंने कहा कि, अजर्ज इकोनॉमिक ग्रोथ को बढ़ावा देने के लिए हमें वायु प्रदूषण को कम करना होगा।

### 3) Dainik InqLab

## स्वच्छ हवा नागरिकों का मौलिक अधिकार, हर हाल में कम करना होगा प्रदूषण: सुरेश प्रभू

**समाचार:** स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का मौलिक अधिकार है लेकिन पिछले कुछ दिनों में स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है।

स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। लेकिन पिछले कुछ दिनों में स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है।

स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। लेकिन पिछले कुछ दिनों में स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है।

स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। लेकिन पिछले कुछ दिनों में स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है।

### 4) Dainik Lead

## स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का अधिकार : सुरेश प्रभू

**समाचार:** स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का मौलिक अधिकार है लेकिन पिछले कुछ दिनों में स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है।

स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। लेकिन पिछले कुछ दिनों में स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है।

**वर्तमान नीतियां से केवल आंशिक नर्तिविधि को फायदा**

पर्यावरण और स्वास्थ्य विभाग, नए दिल्ली में एक बैठक के दौरान सुरेश प्रभू ने कहा कि, स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। लेकिन पिछले कुछ दिनों में स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है।

स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का मौलिक अधिकार है। लेकिन पिछले कुछ दिनों में स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है। स्वच्छ हवा और पानी को सुरक्षित रखने में सरकार को चुनौती मिली है।

## 5) Dainik Nayak

### स्वच्छ हवा नागरिकों का मौलिक अधिकार, हर हाल में कम करना होगा प्रदूषण: सुरेश प्रभु'

लखनऊ। स्वच्छ हवा और पानी का नागरिक का अधिकार है। लेकिन स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। हमें वायु की खराब गुणवत्ता को हल करने पर ध्यान देना होगा। कलाम है पूर्व रेलमंत्री और सांसद सुरेश प्रभु का। वह सेंटर फॉर स्टडी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड पॉलिसी सीएसटीडीपी में सेंटर फॉर एयर क्लियरिंग स्टडीज (सीएफएस) की शेर से आयोजित भारत स्वच्छ वायु शिखर सम्मेलन (भाईसीएस 2021) में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि, राज्यों के इलेक्ट्रिकल के तरीकों को प्रोत्साहित कर, परिवहन के तरीकों में बदलाव करना, औद्योगिक प्रदूषण को कम करना, बेहतर प्रबंधन के माध्यम से इस पर काबू पाया जा सकता है। समाधान उपलब्ध हैं, निरंतरता का समय है, लेकिन संकट स्मृति और समर्पण प्रयासों से ही हम वायु प्रदूषण को मूल कारण को रोक सकते हैं। नागरिकों को स्वच्छ वायु प्रदान कर सकते हैं। इस अवसर पर विश्व, प्रौद्योगिकी के नित्य अध्ययन केंद्र (सीएसटीडीपी) के कार्यकारी निदेशक डॉ जय असुंडी। कहा कि, हमारा ध्यान वायु प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नुकसान को दूर करने पर है।

आईसीएस के माध्यम से हम मजबूत नीतियों को तैयार करने में मदद करने के लिए वायु प्रदूषण पर महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने की उम्मीद करते हैं। वहीं दिल्ली बहुत सारे अच्छे नीतियां हैं। लेकिन सही प्रकार की नीतियों के साथ जाने के लिए स्टडीक टेड प्राप्त करने के लिए हमें कठिने नियमक तंत्र और कम लागत वाले तरीकों को लागू करने की आवश्यकता है।

रिश्तों इम्प्लीमेंटेशन एंड इनोवेशन की सीईओ शिल्पा मिश्रा ने कहा कि, नीति निर्माताओं के सामने वायु प्रदूषण को कम करने की आवश्यकता है। रिश्तों के कार्यालय में कहा कि, भारत में वर्तमान नीतियां बहुत अधिक विकास की जरूरत हैं। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए कठोर नीतियों की आवश्यकता है। वहीं मेदांत रोबोटिक संस्थान के सह अध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार ने बताया कि, वायु प्रदूषण आज एक

राष्ट्रीय स्वास्थ्य आपातकाल है। पहले, मेरे फेफड़ों के कैंसर के उपचार के लिए मेरे घुमपान न करने वाले थे अब उनमें से लगभग 50% घुमपान न करने वाले हैं। हालांकि, भारत में आज हर कोई घुमपान करने वाला है, जिसमें नवजात शिशु भी शामिल हैं, क्योंकि वे प्रदूषित हवा में सांस ले रहे हैं। हमें इस पर और जागरूकता की जरूरत है। एचआईवी के आखिरी स्टेज में काल वायु प्रदूषण, बल्कि इसके स्वास्थ्य प्रभावों के संदर्भ में सबसे अधिक प्रभाव वाले लोगों की पहचान करने की आवश्यकता है। व जॉर्ज डार्विनसुट फोर प्लेनबल टेक्नोलॉजी के कार्यकारी निदेशक डॉ विवेकानंद झा ने कहा कि लगभग 6-7 वैश्विक शीत ऋतु वायु प्रदूषण को कारण होती है। भारत 8-10 की रींग में है, और बढ़ रहा है। अब यह है कि एक बार मत्स्यारी की स्थिति में सुझाव होने पर, लोग अपने पुत्रों लक्ष्मी पर ध्यान देने जाएं, क्योंकि अधिक गतिविधि इतना घरे में, लोग वायु प्रदूषण पर जाने के लिए बेताब है। जब तक हम लोगों को बेहतर विकल्प नहीं देते, तब तक चीजें बेहतर होने पर वे अपने पुत्रों लक्ष्मी पर ध्यान देने जाएं।



## 6) Hindustan

# स्वच्छ हवा और पानी लोगों का मौलिक अधिकार : प्रभु

नई दिल्ली | विशेष संवाददाता

स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का अधिकार है। लेकिन स्थिति बद से बदतर होती जा रही है और लोग इस अधिकार से वंचित हो रहे हैं। इसलिए हमें वायु की खराब गुणवत्ता के मूल कारणों का हल तलाशना होगा। यह कहना है पूर्व रेलमंत्री और सांसद सुरेश प्रभु का।

प्रभु सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड पॉलिसी (सीएसटीडीपी) में सेंटर फॉर एयर क्लियरिंग स्टडीज की ओर से आयोजित भारत स्वच्छ वायु शिखर सम्मेलन में बोल रहे थे। उन्होंने कहा, ऊर्जा के प्रयोग के तरीकों, परिवहन में बदलाव कर, औद्योगिक प्रदूषण घटाकर, बेहतर प्रबंधन के माध्यम से इस

वायु प्रदूषण स्वास्थ्य आपातकाल

मेदांता रोबोटिक संस्थान के सह अध्यक्ष डॉ. अरविंद कुमार ने कहा, वायु प्रदूषण राष्ट्रीय स्वास्थ्य आपातकाल है। मेरे पास फेफड़ों के कैंसर के रोगी पहले 5% ऐसे थे जो घुमपान नहीं करते थे पर अब इन रोगियों की संख्या 50% है।

पर काबू पाया जा सकता है। सीएसटीडीपी के कार्यकारी निदेशक डॉ. जय असुंडी ने कहा, हमारा ध्यान वायु प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को दूर करने पर है। दिल्ली रिसर्च इम्प्लीमेंटेशन एंड इनोवेशन की सीईओ शिल्पा मिश्रा ने कहा कि नीति निर्माताओं के सामने वायु प्रदूषण से हो रहे मौसमी बदलाव के हल निकालने की चुनौती है।

## 7) Jharkhand Jagran

# स्वच्छ हवा नागरिकों का मौलिक अधिकार, हर हाल में कम करना होगा प्रदूषण : सुरेश प्रभू

रांची। स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का अधिकार है। लेकिन स्थिति बद से बदतर होती जा रही है। हमें वायु की खराब गुणवत्ता के मूल कारणों पर बात करनी होगी। ये कहना है पूर्व रेलमंत्री और सांसद सुरेश प्रभु का। वह सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड पॉलिसी (सीएसटीईपी) में सेंटर फॉर एयर पॉल्यूशन स्टडीज (सीएपीएस) की ओर से आयोजित भारत स्वच्छ वायु शिखर सम्मेलन (आईसीएस 2021) में बोल रहे थे। ऑनलाइन आयोजित इस कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि, ऊर्जा के इस्तेमाल के तरीकों को बदल कर, परिवहन के तरीकों में बदलाव करके, औद्योगिक प्रदूषण को कम करके, बेहतर प्रबंधन के माध्यम से इस पर काबू पाया जा सकता है। समाधान उपलब्ध हैं, परिवर्तन संभव है, लेकिन केवल समर्पित और समन्वित प्रयासों से ही हम वायु प्रदूषण के मूल कारण को समझ सकते हैं। नागरिकों को स्वच्छ वायु प्रदान कर सकते हैं। इस अवसर पर



विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नीति अध्ययन केंद्र (सीएसटीईपी) के कार्यकारी निदेशक डॉ जय असुंडी ने कहा कि, हमारा ध्यान वायु प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को दूर करने पर है। आईसीएस के माध्यम से हम मजबूत नीतियों को तैयार करने में मदद करने के लिए वायु प्रदूषण पर महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने की उम्मीद करते हैं।  
वहीं दिल्ली रिसर्च इम्प्लीमेंटेशन एंड इनोवेशन की सीईओ शिल्पा मिश्रा ने कहा कि, नीति निमाताओं के सामने वायु प्रदूषण के कारण हो रहे मौसमी बदलाव पर ध्यान देने

और उसके समाधान निकालने की चुनौती है। पर्यावरण और जलवायु कार्यक्रम, ब्लूमबर्ग की भारत निदेशक प्रिया शंकर ने कहा कि, हमारे पास बहुत सारी अच्छी नीतियां हैं। लेकिन सही प्रकार की नीतियों के साथ आने के लिए सटीक डेटा प्राप्त करने के लिए हमें कड़े नियामक तंत्र और कम लागत वाले तरीकों को लागू करने की आवश्यकता है। रिसर्च स्कॉलर डॉ ग्रेगर कीसेवेटर का कहना था कि, भारत में वर्तमान नीतियां केवल आर्थिक विकास को भरपाई करेंगी, वायु प्रदूषकों के कारणों को कम नहीं करेंगी।

## 8) Jansandesh Times



## 9) Jansandesh

### पूर्व रेलमंत्री व सांसद सुरेश प्रभु का बयान, स्वच्छ हवा जनता का है मौलिक अधिकार

**संभावना**

संभावना: स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का अधिकार है। लेकिन निश्चिंत बंद से बयान होते जा रही है। हमें वायु को स्वच्छ प्रदूषण के मूल कारणों पर बतानी होगी। ये कहना है पूर्व रेलमंत्री और सांसद सुरेश प्रभु का। वह सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड पॉलिटी (सीएसटीपी) में सेंटर फॉर एयर प्रदूषण स्टडीज (सीएपीएस) को और से आवेगित धारा स्वच्छ वायु सिद्ध समितिलन (आईसीएसए 2021) में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि, ऊर्जा के इस्तेमाल के तरीकों को बदल कर परिवहन के तरीकों में बदलाव करने, औद्योगिक प्रदूषण को कम करने, बेहतर प्रबंधन के माध्यम से इस पर वायु का ज़रूरत है। समन्वय उपकरण हैं परिवर्तन संभव है लेकिन केवल समर्थित और समन्वित प्रयासों से ही हम वायु प्रदूषण को कम करने में सक्षम हो सकते हैं। नागरिकों को स्वच्छ वायु प्रदान कर सकते हैं। इस अवसर पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नीति अध्ययन केंद्र (सीएसटीपी) के

कार्यकारी निदेशक डॉ जय अस्तुती ने कहा कि, हमारा ध्यान वायु प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को दूर करने पर है। आईसीएसए के माध्यम से हम वास्तविक नैतिकों को तैयार करने में मदद करने के लिए वायु प्रदूषण पर महात्मपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने को उम्मीद करते हैं। वहीं दिल्ली रिसर्च इन्फॉर्मेटिव एंड इवेलिकन को सीईओ विश्व विद्या ने कहा कि नीति निर्माताओं के सामने वायु प्रदूषण के कारण ही गैर मौसमी बदलाव पर ध्यान देने और इसके समाधान निकालने को चुनौती है। परिवहन और ऊर्जा के क्षेत्रों में नीति निर्माण को समर्थित और जलवायु परिवर्तन अनुसंधान को भारत निदेशक प्रिया शर्मा ने कहा कि, हमारे पास बहुत सारी अच्छी नीतियां हैं। लेकिन गरीब प्रकाश को नीतियों के साथ आने के लिए सटीक डेटा प्राप्त करने के लिए हमें कई निष्पाक संघ

और कम लागत वाले तरीकों को लागू करने की आवश्यकता है। रिसर्च स्कॉलर डॉ डेवा कोविंदर का कहना था कि, भारत में वर्तमान नीतियां केवल अधिक विकास को प्रोत्साहित करती हैं। वायु प्रदूषण के कारणों को कम नहीं करती। वायु प्रदूषण के स्वास्थ्य प्रभावों को कम करने के लिए कठोर नीतियों की आवश्यकता है। वहीं मैट्रोल टेक्नोलॉजिकल रिसर्च के सह अध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार ने बताया कि, वायु प्रदूषण आज एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य अजिजाकाल है। पहले भी केन्द्रों के फैसले के कारण 8% रोजी धूम्रपान न करने वाले थे अब उनमें से लगभग 50% धूम्रपान न करने वाले हैं। हालांकि, भारत में आज हर कोई धूम्रपान करने वाला है जिसमें नवजात शिशु भी शामिल हैं, क्योंकि वे प्रदूषित हवा में रहते जा रहे हैं। हमें इस पर और जागरूकता की जरूरत है। एपीआई के अध्यक्ष डॉ डेविड एस प्रोन्वाम

ने कहा कि हमें न केवल वायु प्रदूषण, बल्कि इसके स्वास्थ्य प्रभावों के संदर्भ में सबसे अधिक प्रभाव वाले लोगों को पहचान करने की आवश्यकता है। 4 जॉन इंटीट्यूट फॉर एनवायरनमेंटल हेल्थ इंस्टीट्यूट के कार्यकारी निदेशक प्रो विवेकानंद झा ने कहा कि लगभग 6% वैश्विक मौसम बदली वायु प्रदूषण के कारण होती है। भारत 8-10% को संभाल में है, और वायु का है। उदाहरण के लिए एक बार महागती की निष्पत्ति में धूम्रपान होने पर, लोग अपने पुत्रों तरीकों पर बयान वाले जाते हैं। वहीं अधिक परिचित इलाहा भीर है, लोग वायु परती पर आने के लिए बेकाब हैं। जब तक हम लोगों को बेहतर विकल्प नहीं देते, तब तक चीजें बेहतर होने पर वे अपने पुत्रों तरीकों पर बयान वाले जाते हैं। टोपीट संघों के कोविड वायु प्रदूषण प्रिंसिपल विज्ञान गुफाटी ने कहा कि हमें जल्द से जल्द नीतिगत रूप से हटने की जरूरत है। आज हम जो वायु प्रदूषण पर उत्तरे हैं, वही वायु प्रदूषण अब से 15 साल बाद बहा होगा। इसलिए हमें परिवर्ण पर ध्यान देने की जरूरत है।

## 10) Lokmitra

### स्वच्छ हवा नागरिकों का मौलिक अधिकार, हर हाल में कम करना होगा प्रदूषण: सुरेश प्रभु

संभावना: स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का अधिकार है। लेकिन निश्चिंत बंद से बयान होते जा रही है। हमें वायु को स्वच्छ प्रदूषण के मूल कारणों पर बतानी होगी। ये कहना है पूर्व रेलमंत्री और सांसद सुरेश प्रभु का। वह सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड पॉलिटी (सीएसटीपी) में सेंटर फॉर एयर प्रदूषण स्टडीज (सीएपीएस) को और से आवेगित धारा स्वच्छ वायु सिद्ध समितिलन (आईसीएसए 2021) में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि, ऊर्जा के इस्तेमाल के तरीकों को बदल कर, परिवहन के तरीकों में बदलाव करने, औद्योगिक प्रदूषण को कम करने, बेहतर प्रबंधन के माध्यम से इस पर वायु का ज़रूरत है। समन्वय उपकरण हैं परिवर्तन संभव है लेकिन केवल समर्थित और समन्वित प्रयासों से ही हम वायु प्रदूषण को कम करने में सक्षम हो सकते हैं। नागरिकों को स्वच्छ वायु प्रदान कर सकते हैं। इस अवसर पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नीति अध्ययन केंद्र (सीएसटीपी) के

कार्यकारी निदेशक डॉ जय अस्तुती ने कहा कि, हमारा ध्यान वायु प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को दूर करने पर है। आईसीएसए के माध्यम से हम वास्तविक नैतिकों को तैयार करने में मदद करने के लिए वायु प्रदूषण पर महात्मपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने को उम्मीद करते हैं। वहीं दिल्ली रिसर्च इन्फॉर्मेटिव एंड इवेलिकन को सीईओ विश्व विद्या ने कहा कि, नीति निर्माताओं के सामने वायु प्रदूषण के कारण ही गैर मौसमी बदलाव पर ध्यान देने और इसके समाधान निकालने की चुनौती है। परिवहन और ऊर्जा के क्षेत्रों में नीति निर्माण को समर्थित और जलवायु परिवर्तन अनुसंधान को भारत निदेशक प्रिया शर्मा ने कहा कि, हमारे पास बहुत सारी अच्छी नीतियां हैं। लेकिन गरीब प्रकाश को नीतियों के साथ आने के लिए सटीक डेटा प्राप्त करने के लिए हमें कई निष्पाक संघ

आज भी नीतियां हैं। लेकिन गरीब प्रकाश को नीतियों के साथ आने के लिए सटीक डेटा प्राप्त करने के लिए हमें कई निष्पाक संघ और कम लागत वाले तरीकों को लागू करने की आवश्यकता है। रिसर्च स्कॉलर डॉ डेवा कोविंदर का कहना था कि, भारत में वर्तमान नीतियां केवल अधिक विकास को प्रोत्साहित करती हैं। वायु प्रदूषण के कारणों को कम नहीं करती। वायु प्रदूषण के स्वास्थ्य प्रभावों को कम करने के लिए कठोर नीतियों की आवश्यकता है। वहीं मैट्रोल टेक्नोलॉजिकल रिसर्च के सह अध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार ने बताया कि, वायु प्रदूषण आज एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य अजिजाकाल है। पहले भी केन्द्रों के फैसले के कारण 8% रोजी धूम्रपान न करने वाले थे अब उनमें से लगभग 50% धूम्रपान न करने वाले हैं। हालांकि, भारत में आज हर कोई धूम्रपान करने वाला है, जिसमें नवजात शिशु भी शामिल हैं, क्योंकि वे प्रदूषित हवा में रहते जा रहे हैं। हमें इस पर और जागरूकता की जरूरत है। एपीआई के अध्यक्ष डॉ डेविड एस प्रोन्वाम ने कहा कि हमें न केवल वायु प्रदूषण, बल्कि इसके स्वास्थ्य प्रभावों के संदर्भ में सबसे अधिक प्रभाव वाले लोगों को पहचान करने की आवश्यकता है। 4 जॉन इंटीट्यूट फॉर एनवायरनमेंटल हेल्थ इंस्टीट्यूट के कार्यकारी निदेशक प्रो विवेकानंद झा ने कहा कि लगभग 6% वैश्विक मौसम बदली वायु प्रदूषण के कारण होती है। भारत 8-10% को संभाल में है, और वायु का है। उदाहरण के लिए एक बार महागती की निष्पत्ति में धूम्रपान होने पर, लोग अपने पुत्रों तरीकों पर बयान वाले जाते हैं। वहीं अधिक परिचित इलाहा भीर है, लोग वायु परती पर आने के लिए बेकाब हैं। जब तक हम लोगों को बेहतर विकल्प नहीं देते, तब तक चीजें बेहतर होने पर वे अपने पुत्रों तरीकों पर बयान वाले जाते हैं। टोपीट संघों के कोविड वायु प्रदूषण प्रिंसिपल विज्ञान गुफाटी ने कहा कि हमें जल्द से जल्द नीतिगत रूप से हटने की जरूरत है। आज हम जो वायु प्रदूषण पर उत्तरे हैं, वही वायु प्रदूषण अब से 15 साल बाद बहा होगा। इसलिए हमें परिवर्ण पर ध्यान देने की जरूरत है।

## 11) Nai Soch Express

### स्वच्छ हवा नागरिकों का मौलिक अधिकार, हर हाल में कम करना होगा प्रदूषण : सुरेश प्रभु

नई दिल्ली/पटना/संवाददाता। स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का अधिकार है। लेकिन स्थिति बंद से बदतर होती जा रही है। हमें वायु की खराब गुणवत्ता के मूल कारणों पर बात करनी होगी। ये कहना है पूर्व रेलमंत्री और सांसद सुरेश प्रभु का। वह सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड पॉलिसी (सीएसटीईपी) में सेंटर फॉर एयर पॉल्यूशन स्टडीज (सीएपीएस) की ओर से आयोजित भारत स्वच्छ वायु शिखर सम्मेलन (आईसीएस 2021) में मौल्य रहे थे। उन्होंने कहा कि, ऊर्जा के इस्तेमाल के तरीकों को बदल कर, परिवहन के तरीकों में बदलाव करके, औद्योगिक प्रदूषण को कम करके, बेहतर प्रबंधन के माध्यम से इस पर काबू पाया जा सकता है। समाधान उपलब्ध हैं, परिवर्तन संभव है, लेकिन केवल समर्पित और समन्वित प्रयासों से ही हम वायु प्रदूषण के मूल कारण को समझ सकते हैं। नागरिकों को स्वच्छ वायु प्रदान कर सकते हैं। इस अवसर पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नीति अध्ययन केंद्र (सीएसटीईपी) के कार्यकारी निदेशक डॉ जय असुंडी ने कहा कि,

हमारा ध्यान वायु प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को दूर करने पर है। आईसीएस के माध्यम से हम मजबूत नीतियों को तैयार करने में मदद करने के लिए वायु प्रदूषण पर महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने की उम्मीद करते हैं। वहीं दिल्ली रिसर्च इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्वैरनमेंटल एंड इन्फोर्मेशन की सोईओ रिलिया मिश्रा ने कहा कि, नीति निर्माताओं के सामने वायु प्रदूषण के कारण हो रहे मौसमी बदलाव पर ध्यान देने और उसके समाधान निकालने की चुनौती है। वर्तमान नीतियों से केवल आर्थिक गतिविधि को फायदा, प्रदूषण नियंत्रण नहीं परिवहन और जलवायु कार्यक्रम, बल्कि भारत निदेशक शिवा शंकर ने कहा कि, हमारे पास बहुत सारी अच्छी नीतियां हैं। लेकिन सही प्रकार की नीतियों के साथ आने के लिए सटीक डेटा प्राप्त करने के लिए हमें कई निष्पत्त तंत्र और कम लागत वाले तरीकों को लागू करने की आवश्यकता है। रिसर्च स्कालर डॉ जेगर् कीसेनेट का कहना था कि, भारत में वर्तमान नीतियां केवल आर्थिक विकास की भावना करती, वायु प्रदूषण को कारणों को कम नहीं करती। वायु प्रदूषण के



स्वास्थ्य प्रभावों को कम करने के लिए कठोर नीतियों की आवश्यकता है। वहीं मेदांत रेवोडिक संस्थान के सह अध्यक्ष डॉ अरविंद कुमार ने बताया कि, वायु

प्रदूषण आज एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य आपातकाल है। पहले, मॉर फेफड़ों के कैंसर के लगभग 5% रोगी धूम्रपान न करने वाले थे; अब उनमें से लगभग

50% धूम्रपान न करने वाले हैं। हालांकि, भारत में आज हर कोई धूम्रपान करने वाला है, विषम नस्लवादी भी शामिल है, क्योंकि वे प्रदूषित

हवा में सांस ले रहे हैं। हमें इस पर और जागरूकता की जरूरत है। एक्सपर्ट्स के अनुसार डॉ डैनियल एस ग्रीनबाम ने कहा कि हमें न केवल वायु प्रदूषण, बल्कि इसके स्वास्थ्य प्रभावों के संदर्भ में सबसे अधिक प्रभाव वाले क्षेत्रों की पहचान करने की आवश्यकता है। द जॉर्नल इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायरनमेंटल हेल्थ इंफोर्मा के कार्यकारी निदेशक प्रो विवेकानंद झा ने कहा कि लगभग 6% वैश्विक मौतें बाहरी वायु प्रदूषण के कारण होती हैं। भारत 8-10% की सीमा में है, और बढ़ रहा है। डर यह है कि एक बार महामारी की स्थिति में सुधार होने पर, लोग अपने पुराने तरीकों पर वापस चले जाएंगे, क्योंकि आर्थिक गतिविधि इनाम थीर है, लोग वापस पटरी पर आने के लिए बेचबू हैं। जब तक हम लोगों को बेहतर विकल्प नहीं देते, तब तक चीजें बेहतर होने पर वे अपने पुराने तरीकों पर वापस चले जाएंगे। डॉक्टरां कंसनी के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट विष्णु गुप्ता ने कहा कि हमें जल्द से जल्द जीवाम ईन से हटने की जरूरत है। आज हम जो सड़कों पर चलते हैं, वही तन करंगे कि अब से 15 साल बाद वन होगा। इसलिए हमें परिवहन पर ध्यान देने की जरूरत है।

## 12) Navodaya Times

### स्वच्छ हवा नागरिकों का मौलिक अधिकार हर हाल में कम करना होगा प्रदूषण: प्रभु

■ हमें वायु की खराब गुणवत्ता के मूल कारणों पर बात करनी होगी

नई दिल्ली, 27 अगस्त (नवोदय टाइम्स): स्वच्छ हवा और पानी हर नागरिक का अधिकार है, लेकिन स्थिति बंद से बदतर होती जा रही है। हमें वायु की खराब गुणवत्ता के मूल कारणों पर बात करनी होगी। समाधान उपलब्ध हैं, परिवर्तन संभव है, लेकिन केवल समर्पित प्रयासों से ही हम वायु प्रदूषण के मूल कारण को समझ सकते हैं और नागरिकों को स्वच्छ वायु प्रदान कर

सकते हैं। पूर्व रेलमंत्री और सांसद सुरेश प्रभु ने सेंटर फॉर स्टडी ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड पॉलिसी (सीएसटीईपी) में सेंटर फॉर एयर पॉल्यूशन स्टडीज (सीएपीएस) की ओर से आयोजित भारत स्वच्छ वायु शिखर सम्मेलन (आईसीएस 2021) में यह कहते हुए ऊर्जा, परिवहन के तरीकों में बदलाव, औद्योगिक प्रदूषण को कम कर, बेहतर प्रबंधन के माध्यम से वायु प्रदूषण पर काबू पाए जाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि स्वच्छ हवा जनता का मौलिक अधिकार है इसलिए हर



हाल में प्रदूषण कम करना होगा। इस अवसर पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नीति अध्ययन केंद्र (सीएसटीईपी) के कार्यकारी निदेशक डॉ. जय असुंडी ने कहा कि हमारा ध्यान वायु प्रदूषण के कारण स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को दूर करने पर है। आईसीएस के माध्यम से हम मजबूत नीतियों को तैयार करने में मदद करने के लिए वायु प्रदूषण पर महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने की उम्मीद करते हैं।



13) Rashtriya Judgement

डिल

लखनऊ/बाराबंकी/उन्नाव/हरदोई

3

लखनऊ, राशिवार, 28 अप्रैल, 2021

राष्ट्रीय जजमेन्ट

# पूर्व रेलमंत्री व सांसद सुरेश प्रभु का बयान, स्वच्छ हवा जनता का है मौलिक अधिकार

**संवादकर्ता**

लखनऊ। लखनऊ हाईकोर्ट की दर बाराबंकी का अधिवक्ता है। संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है। संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है। संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है।

राज्य सरकार के विचार के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है। संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है। संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है।



लखनऊ। पूर्व रेलमंत्री व सांसद सुरेश प्रभु ने कहा कि स्वच्छ हवा जनता का है मौलिक अधिकार। उन्होंने कहा कि स्वच्छ वायु का अधिकार संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को प्राप्त है।

उत्तर प्रदेश सरकार के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है। संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है। संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को स्वच्छ वायु का अधिकार है।

कोर्ट ने कहा कि स्वच्छ हवा जनता का है मौलिक अधिकार। उन्होंने कहा कि स्वच्छ वायु का अधिकार संविधान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक को प्राप्त है।